वी0सी0डी0 नं0 489 इलुआवरी (नेपाल)

मु0 09.04.67 ता03.08.06

सब धंधों में है नुकसान सिवाय एक ईश्वरीय धंधे के

धुलाबाड़ी में रात्रि क्लास चल रहा था - 9 अप्रैल, 1967 का। पहले पेज के मध्यान्त में बात चल रही थी कि अब विनाश तो होना ही है; क्योंकि विनाश की सामग्री तैयार हो चुकी है। आज से 70 साल पहले एटॉमिक एनर्जी बनी ही नहीं थी और सत्तर साल पहले भगवान भी इस सृष्टि पर नहीं आया हुआ था। सत्तर साल के अंदर ही भगवान भी आता है और स्थापना की सामग्री भी बाहर निकालता है और विनाश की सामग्री भी तैयार कराता है। (फिर) नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश (हो जाता है।) वह सृष्टि रूपी मकान का मालिक है ना! तो वह जानता है कि अब ये दुनियाँ बहुत पुरानी हो चुकी है। मकान जब बहुत पुराना हो जाता है, तो कोई भी रिपैर करने वाला उसको रिपैर करने के बावजूद भी, संभाल नहीं पाता। ये सृष्टि रूपी मकान भी ऐसा ही है। ढाई हज़ार साल के बाद बड़े अच्छे-2 रिपैरर्स आए। इब्राहिम आए, बुद्ध आए, क्राइस्ट आए, गुरु नानक आए, विवेकानंद आए। (सभी ने) अपने-2 तरीके से रिपैर किया; लेकिन रिपैर कितने दिन चलेगा? मकान तो पुराना होना ही है। अब इतना पुराना हो गया कि कोई भी नहीं कह सकता कि इस मकान में हम अपने जीवनभर तन से, मन से, धन से, समय से, सम्पर्कियों से और संबंधियों से सदा सुखी रहते हैं। ऐसे समय पर इस सृष्टि रूपी मकान का मालिक ‘भगवान’ इस सृष्टि पर आ जाता है। जब सब अपने करिश्मे दिखा देते हैं, तो अंत में आता है। आकर के तीन संदेश देता है-

मैं इस सृष्टि का कर्ता-धर्ता इस सृष्टि पर आया हुआ हूँ, पतित दुनियाँ को पावन बनाने के लिए (एवं) कलियुगी झूठखंड को सचखंड बनाने के लिए। दो बातों का संदेश हुआ- एक तो भगवान आया हुआ है और दूसरा- नई दुनियाँ बनाने के लिए आया हुआ है और तीसरा संदेश है- इस दुनियाँ का विनाश सामने खड़ा है; क्योंकि एटॉमिक एनर्जी तैयार हुई पड़ी है। सन् 1945 में हिरोशिमा नागासाकी के ऊपर 20-20 मेगावॉट की बम्बियाँ पड़ी थीं, तो दोनों शहर तबाह हो गए और अभी तो हज़ारों-हज़ार मेगावॉट के एटम बॉम्ब, हाइड्रोजन बॉम्ब, कीटाणु बॉम्ब तैयार हुए पड़े हैं बड़े-2 देशों के पास, जिन्हें महाशक्तियाँ कहा जाता है। उनके पास भंडार भरा पड़ा है। जिसके लिए गीता में भगवान ने बोला- हे अर्जुन! ये सारी दुनियाँ मेरे दाढ़ों के बीच में चबाई जाने वाली है। आसमान में ये एटम बॉम्ब रूपी दाढ़ें तैर रही हैं, ज़मीन के अंदर सुरंगों में और समंदर में समाई हुई हैं।

कितने देश हैं! सबके आपस में मत-मतान्तर चल रहे हैं। देश अलग-2 हैं, धर्म अलग-2 हैं, भाषाएँ अलग-2 हैं, मत-मतान्तर अलग-2 हैं। सब आपस में झगड़ रहे हैं। छुट-फुट लड़ाइयाँ भी होती रहती हैं। जैसे इराक की लड़ाई हुई, अफगानिस्तान की लड़ाई हुई, तो ऐसी-2 स्टेज भी आ पहुँची कि अब एटमिक युद्ध शुरू हुआ कि हुआ; लेकिन ये सब तो रिहर्सल हो रही है। भगवान जिस कार्य के लिए आया हुआ है, वो नई दुनियाँ की स्थापना जब तक नहीं होती है, नई दुनियाँ का नया संगठन जब तक तैयार नहीं होता है, तब तक विनाश रुका हुआ है। अब भगवान कहते हैं कि विनाश सामने खड़ा है। चिगारी लगी हुई है। फिर सारी दुनियाँ में ये चिगारी फैल जावेगी। बाप कहते हैं- अब बुद्धियोग से चलो अपने घर। बुद्धि कहो, मन कहो, इसी को आत्मा कहा जाता है। मन-बुद्धि रूपी आत्मा को इस दुनियाँ से हटा दो, तब ही मेरे को याद कर सकेंगे। जैसे गीता में अर्जुन ने भगवान से पूछा- हे भगवन्! ये मन बड़ा चंचल है, ये कंट्रोल में नहीं आता, इधर-उधर भाग खड़ा होता है, इसका उपाय

बताइए। तो भगवान ने कहा- "असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥" (गीता 6/35)

दो बातें हैं, जिनसे मन को कंट्रोल किया जा सकता है। एक तो अभ्यास करें- बार-2 मन इधर-उधर भागे, बार-2 ईश्वर की स्मृति में लगाएँ। ये प्रैक्टिस पक्की करें और दूसरा- ये प्रैक्टिस भी तब पक्की होगी, जब इस (नाशवान) दुनियाँ से वैराग आवेगा। जैसे मकान होता है, मकान को बनाने वाला बाप होता है, बाप के बच्चे होते हैं। बाप नया मकान बनाता है, तो पुराना मकान तोड़ना पड़ता है। बच्चों की बुद्धि नए मकान में लग जाती है। चूँकि मकान पुराना हो गया है, टूटने वाला है, इसलिए उससे बच्चों का बुद्धियोग हट जाता है। ऐसे ही जो भगवान के समझदार बच्चे हैं, उनको इस सृष्टि रूपी मकान से-जो कि पुराना हो चुका है-अपना बुद्धियोग हटा लेना चाहिए। बुद्धियोग हटेगा, तो भगवान में बुद्धि लगेगी। नहीं हटेगा, तो देह और देह के संबंधियों में, देह के पदार्थों में, बड़े-2 मल्टिमिलियनैर्स की बनाई हुई मिलों में, मल्टी स्टोरीज़ बिल्डिगों में (ही) बुद्धि धरी रहेगी। ये सब माया का पॉम्प है। जब दुनियाँ जानी होती है, तो अंतिम सौ वर्ष के अंदर ये माया का पॉम्प खड़ा हो जाता है। ऊँची-2 बिल्डिगें बनती जाती हैं, सुहावने शहर बनते जाते हैं। लोग समझते हैं- ये तो अब सुख की दुनियाँ आ गई; लेकिन अगर देखा जाए, तो वो सुख की दुनियाँ थोड़ों के लिए तैयार होती है। ज़्यादा परसेंटेज पब्लिक गरीब ही बनी रहती है। जो भगवान के पुराने-ते-पुराने भारतवासी बच्चे (रुद्राक्षगण) हैं, उनकी हालत तो बहुत ही ख़राब हो जाती है। वो बताते हैं कि इस छी-2 दुनियाँ से, पुरानी दुनियाँ से वैराग आना चाहिए; क्योंकि अब हम भारतवासियों की राजाई स्थापन होने वाली है। तुम कहते भी हो ना कि भारत सबका सिरताज था। अभी सब देशों का मोहताज बन गया है। अभी भगवान बाप फिर इन सब देशों का सरताज बनाने के लिए आया हुआ है। और-2 धर्मपिताएँ भी आते हैं। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आदि धर्म स्थापन करते हैं। वे सब ढाई हज़ार वर्ष के अंदर आते हैं। उन सबकी हिस्ट्री मौजूद है; लेकिन जब (5000 साल पूर्व) भगवान ने आकर के ये नई दुनियाँ रची थी, सनातन धर्म की स्थापना की थी उसका कोई को पता नहीं। हज़ारों वर्ष पुरानी बात हो चुकी है। सिर्फ़ (सच्ची) गीता में इशारा दिया है कि 5000 साल पहले महाभारत युद्ध हुआ था। भगवान ने आकर गीता ज्ञान देकर राजयोग सिखाया था; लेकिन उसमें भी मनुष्य गुरुओं ने घोटाला कर दिया। वो महाभारत युद्ध द्वापर के अंत में दिखा दिया कि द्वापर के अंत में (बच्चाबुद्धि) कृष्ण भगवान आए और उन्होंने महाभारत युद्ध कराया और युद्ध कराने के बाद अठारह अक्षौणी सेना-जो आज की दुनियाँ की आबादी के बराबर है-सब ख़लास हो गई। 5 पाण्डव बचे। तो भगवान के आने का फ़ायदा क्या हुआ? द्वापर के अंत में महाभारत युद्ध कराया और पापी कलियुगी दुनियाँ की स्थापना कर दी। तो क्या भगवान पापी दुनियाँ की स्थापना करने के लिए आता है? किसी को कुछ पता नहीं है। इन शास्त्र लिखने वालों को भी पता नहीं है कि भगवान कब आता है। गीता में लिख दिया है- "संभवामि युगे युगे"॥ (गीता 4/8) मैं हर युग में आता हूँ। अरे! कोई बाप होता है, मकान बनाता है, तो नए मकान को गिरा देता है क्या? सतोप्रधान मकान को तो नहीं गिराता। सतोसामान्य स्टेज में भी मकान होता है, तो भी नहीं गिराता। जब टूटने-फूटने लगता है, रजोप्रधान हो जाता है, अति की टूट-फूट हो जाती है, बैठना मुश्किल हो जाता, (चैन की नींद) सोना मुश्किल हो जाता, तो तमोप्रधान मकान को गिराता है।

दुनियाँ की हर चीज़ चार अवस्थाओं से गुज़रती है। चाहे मनुष्य हो, जानवर हो, दुकान हो, मकान हो, दुनियाँ की कोई भी चीज़ हो, चैतन्य हो या जड़ हो, चार अवस्थाओं से गुजरती (जरुर) है। ये सृष्टि भी चार

अवस्थाओं से गुज़रती है। ऐसे नहीं कि जब रजोप्रधान दुनियाँ द्वापरयुग शुरू होता है, तो भगवान को आने की दरकार है। नहीं। या सतयुग में आने की दरकार है। वो तो है ही सतोप्रधान युग। या त्रेता में आने की दरकार है। वहाँ तो है ही (14 कला वाला) राम-राज्य। राम-राज्य का कितना गायन करते हैं। गांधीजी ने कितनी लड़ाई लड़ी राम-राज्य के लिए। वास्तव में (कलाहीन) कलियुग में होता है- रावण-राज्य। दस (धर्मपिताओं के) सिरों का राज्य। दस-2 बुद्धियाँ लगती हैं इस (प्रजातंत्र) संसार के (हिंसक) धर्मों को चलाने के लिए। अनेक धर्म हो जाते हैं, अनेक मत-मतांतर हो जाते हैं, अनेक राजाइयाँ हो जाती हैं, अनेक राजाएँ हो जाते हैं और अंत में वे राजाएँ भी आपस में लड़-झगड़कर प्रजा के ऊपर प्रजा का (महाविनाशकारी यदुवंशी) राज्य स्थापन कर देते हैं।

अब राजा बुद्धिमान होता है, पहलवान होता है, शक्तिवान होता है या प्रजा में ताकत होती है? ताकत ज़्यादा किसमें होती है? राजा में ज़्यादा ताकत होती है। कोई भी धर्मपिता इस सृष्टि पर आकर राजाई स्थापन नहीं करता। वह आकर सिर्फ़ अपने धर्म की धारणाएँ स्थापन करते हैं, धर्म स्थापन करते हैं। कोई राजयोग नहीं सिखाते। जानते ही नहीं। सिखाएँगे कैसे? भगवान ही आकर इस भारत में भारतवासियों को राजयोग सिखाता है। कोई कहे- ऐसी पार्श्यालिटी क्यों करता है कि भारतवासियों को सिखाता है, दूसरे देशवालों को नहीं सिखाता? पार्श्यालिटी नहीं करता है। वह बताता है कि भारत में ब्रह्मचर्य को जितना महत्त्व दिया जाता है, भारत में कन्याओं-माताओं की जितनी सुरक्षा की जाती है पवित्र (अव्यभिचारी) रहने के लिए, उतनी सुरक्षा किसी दूसरे देश में नहीं की जाती है। भगवान को 'पवित्रता' प्रिय है। भगवान के मंदिर में जाते हैं, तो 'मूत-पलिती' हाथ-पाँव लेकर के जाते हैं क्या? शुद्ध-पवित्र होकर जाते हैं ना। ये आज की दुनियाँ की पैदाइश ही मूत-पलिती से होती है। तो भगवान इस मूत-पलिती दुनियाँ को चेंज करने के लिए आता है।

दस इन्द्रियाँ हैं। दस इन्द्रियों में भ्रष्ट इन्द्रियाँ भी हैं, जिन भ्रष्ट इन्द्रियों से मूत-पलिती (हिंसक) काम किया जाता है, तब संतान पैदा होती है और श्रेष्ठ इन्द्रियाँ भी हैं, जिन्हें ज्ञानेन्द्रियाँ कहा जाता है। ज़्यादा आकर्षण कौन-सी इन्द्रियों में होगा? ज्ञानेन्द्रियों में ज़्यादा आकर्षण, ज़्यादा शक्ति होती है या कर्मेन्द्रियों में ज़्यादा आकर्षण, ज़्यादा शक्ति होती है? जिसमें जास्ती शक्ति होगी वह जास्ती लम्बे समय तक सुख भोग सकेगा और जिसमें कम शक्ति होगी वह क्षणभंगुर सुख भोग सकेगा और भोगने में आएगा। मनुष्य बूढ़ा हो जाता है, बीमार हो जाता है, इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती हैं, तो वो दुनियाँ का क्षणभंगुर सुख भी नहीं भोग सकता।

भगवान तो आकर ऐसी दुनियाँ बनाता है जहाँ ज्ञानेन्द्रियों से, श्रेष्ठ इन्द्रियों से सदाकाल का सुख भोगा जा सकता है। वहाँ थकान की बात ही नहीं रहती। यहाँ तो इस दुनियाँ में घड़ी-घड़ी थकान आती है। श्रेष्ठ ज्ञान-इन्द्रियों से आचरण करने वालों को श्रेष्ठाचारी देवता कहा जाता है। उन श्रेष्ठाचारी देवताओं के मंदिर में हम पूजा करते हैं। पूजा का आधार पवित्रता होती है। भगवान ने आकर के अर्जुन को ये खास पाठ पढ़ाया- हे अर्जुन, "काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।" (गीता 3/37) "पाप्मानं प्रजहि ह्येनं॥" (गीता 3/41) ये काम और क्रोध तेरे महाशत्रु हैं, तू इनको जीत ले। बताते हैं- "कामेन्द्रिय जीते जगतजीत।" देवताओं में सबसे बड़ा देवता कौन है? 'महादेव।' महादेव के लिए दिखाते हैं कि उन्होंने कामदेव को भस्म कर दिया। लोग समझते हैं- 'काम' नाम का कोई देवता हुआ होगा, उसको भस्म कर दिया। अरे, भगवान देवताओं को भस्म करेगा कि राक्षसों को भस्म करेगा? ये कामदेव रूपी कामना का भूत (आदम/अर्जुन जैसे मुच्छड़) मनुष्यों के अंदर होता है। (महा) तपस्वी शंकर ने शिव की तपस्या करके उस काम को भस्म किया था। वह काम विकार हम सबके अंदर मौजूद है। जिस

काम विकार की मार (ऽऽ मारी) से बच्चों की पैदाइश होती है। जो सृष्टि चलती है, शुरू होती है, उसकी शुरुवात में भी दुख। पुरुष भी अपने को निस्तेज महसूस करता है, स्त्री को तो और ही ज़्यादा परेशानी होती है। बच्चे की पैदाइश होती है, तो भी परेशानी। बच्चा भी रोते-2 पैदा होता है। माँ को भी दुख होता है, अपार दुख और वो संतान जब बड़ी हो जाती है, वृद्ध हो जाती है, मृत्यु का टाइम आता है, तो अंत समय में (कैसे-2) घाबड़े आते हैं। घाबड़े आते हैं ना! कितनी कठिनाई होती है शरीर छोड़ने में। तो जिसके आदि में भी दुख, मध्य में भी दुख और अंत में भी दुख, ऐसी भ्रष्ट इन्द्रियों की भ्रष्टाचारी सृष्टि को संसार में से नेस्तनाबूद करने के लिए परमात्मा आता है और देवताओं की श्रेष्ठाचारी सृष्टि की स्थापना करता है। उसकी राजधानी तैयार करता है। दूसरे धर्मपिताओं ने न राजाई स्थापन की और न कोई राजधानी स्थापन की। भगवान आकर के देवताओं की राजधानी स्थापन करके जाता है, विश्व की बादशाही स्थापन करके जाता है। और-2 धर्मपिताओं के जो फॉलोवर्स हुए हैं, उन्होंने इच्छा तो की कि हम सारे विश्व के ऊपर राजाई करें। हिटलर, नेपोलियन, मुसोलिनी एक-से बड़े (एक) (विश्वविजय के) आकांक्षी हुए, (जो ये) महत्वाकांक्षा लेकर (भारत में भी) आए कि हम सारी दुनियाँ को विजय कर लेंगे; लेकिन कोई नहीं कर सके। ये तो सिर्फ़ भगवान का सिखाया हुआ राजयोग है, जिस राजयोग से शंकर विश्वनाथ कहलाते हैं। 'हर-हर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गंगे' सारे विश्व के ऊपर उन्होंने योगबल से विजय प्राप्त की थी।

अभी फिर भगवान आया हुआ है। भगवान निराकार को कहा जाता है। वह देह से जन्म नहीं लेता, गर्भ से जन्म नहीं लेता। उसको जन्म-मरण के चक्र से न्यारा कहा जाता है। हम मनुष्य आत्माएँ जन्म-मरण के चक्र में आती हैं, सुख और दुख भोगती हैं। वह न सुख भोगता है और न दुख भोगता है। वह तो सदाकाल बिंदुरूप (शांतिदेवा) आत्मा है। बिंदु कहो, स्टार कहो, उस स्टार का बड़ा रूप ख़ास भारतवर्ष में शिवलिंग के रूप में पूजा जाता है। उसे 'ज्योतिर्लिंगम्' भी कहते हैं। वह परमधाम का रहने वाला है। इस मृत्युलोक की सृष्टि का रहने वाला नहीं है। सूरज, चाँद-सितारों की दुनियाँ से पार रहने वाला है। जैसे गीता में भी लिखा हुआ है- "न तद् भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः। यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम॥" (गीता 15/6) मैं जब इस सृष्टि पर आता हूँ और इस सारी सृष्टि में विनाश बरपा होता है, तो सब आत्माएँ अपना-2 शरीर छोड़कर मेरे परमधाम में पहुँचती हैं, जहाँ से सीधी वापस इस मृत्युलोक में नहीं आतीं। पहले सततेता स्वर्ग फिर नरक।

अभी कलियुग के अंत में भगवान इस सृष्टि पर आया हुआ है। बड़े प्यार से बच्चों को समझाता है। माँ के रूप में लोरी देकर समझाता है। बच्चे, अब मैं आया हुआ हूँ। धीरज धरो। थोड़े टाइम का दुख और है। ये तुम्हारा अंतिम जन्म है। सारी दुनियाँ का ही ये अंतिम जन्म है। इसके बाद इस मृत्युलोक में, इस कलियुगी दुनियाँ में किसी का जन्म नहीं होगा। नई दुनियाँ सतयुग आने वाला है, कलियुग जाने वाला है। अच्छी तरह से समझाता है कि मैं आया हूँ, तुम्हारी स्वर्गीय राजधानी स्थापन करने के लिए। जो राजयोग सीखेंगे, राजाई प्राप्त करेंगे, उनकी सेफ्टी होगी और जो राजयोग नहीं सीखेंगे, परमात्मा के दिए हुए ज्ञान को वैल्यू नहीं देंगे, सेफ्टी तो उनकी भी होगी; लेकिन सिर्फ़ उनकी होगी, जो सिर्फ़ संदेश ले लेते हैं, पुरुषार्थ नहीं करते, पूरी पढ़ाई नहीं पढ़ते। हाँ, जब आवाज़ निकलती है संसार में कि भगवान आया हुआ है, तो चल पड़ते हैं। मतलब मजबूरी के आधार पर चलते हैं। राजाओं जैसा पुरुषार्थ करने की शक्ति नहीं है। तो मैं ऐसी छोटी-सी दुनियाँ स्थापन करता हूँ, जहाँ महाविनाश के टाइम पर 9 लाख सितारे आसमान में चमकेंगे। उन जड़ सितारों की बात नहीं है। आसमान में चमकेंगे अर्थात ऊँची स्टेज में चमकेंगे। जैसी ऊँची स्टेज उनकी होगी, वैसी ऊँची स्टेज दुनियाँ में किसी की भी नहीं होगी। दुनियाँ

उस महाविनाश के टाइम पर त्राहि-त्राहि करेगी। दुखों के पहाड़ गिरेंगे और वो अलमस्त बेफिक्र होकर घूमते रहेंगे। उन्हें कोई भी प्रकार का दुख भासने वाला नहीं है। कुराण में भी लिखा हुआ है- जब कयामत होगी, तो खुदा के बंदे बड़े मौज में रहेंगे। उनको कोई तकलीफ़ नहीं होगी।

मुसलमान लोग भी जन्नत को मानते हैं। क्रिश्चियन लोग भी पैराडाइज़ को मानते हैं। हिंदू भी वैकुण्ठ को मानते हैं। तो ज़रूर हर धर्म से चुनी हुई श्रेष्ठ-2 आत्माएँ भगवान की सिखाई हुई नॉलेज, जो राजयोग की नॉलेज है वो लेती हैं, ग्रहण करती हैं, पूरी पढ़ाई पढ़ती हैं और भगवान से राजाई ले लेती हैं। भगवान खुद आकर राजयोग का स्कूल खोलता है। राजयोग की यूनिवर्सिटी खोलता है। इस यूनिवर्सिटी में राजा बनने का लक्ष्य दिया जाता है। वो यूनिवर्सिटीज मनुष्यों की होती हैं, उनमें एक जन्म की पढ़ाई पढ़ायी जाती है। डॉक्टर बन जाओ, वकील बन जाओ, इंजीनियर बन जाओ। ये पढ़ाई पढ़ाते हैं ना एक जन्म के लिए। वो भी बने बने, न बने कुछ पक्का नहीं और यहाँ तो भगवान बाप गैरन्टी देते हैं कि अगर रेगुलर और पंक्चुअल होकर ये पढ़ाई पढ़ते रहेंगे, तो मैं तुमको 21 जन्मों की बादशाही देने के लिए आया हूँ। ऐसी बादशाही देकर जाऊँगा, जो कोई तुमसे छीन नहीं सकेगा। कोई तुम्हारी राजाई के ऊपर आक्रमण नहीं कर सकेगा। ऐसा सत्युग और त्रेतायुग का राम-कृष्ण का स्वर्गीय राज्य देकर के जाता हूँ। सत्युग में नारायण का राज्य होता है। कहते हैं- 'हे कृष्ण नारायण वासुदेव।' त्रेता में राम-राज्य होता है। ये आदि नारायण को किसने बनाया? सच्ची गीता के ज्ञान ने बनाया। गीता का ज्ञान 'भगवान शिव' आकर ओरली देते हैं। जो ज्ञान देते हैं, उससे नर नारायण बनता है और त्रेतायुग में राम बनता है। नर से आदि नारायण बनाकर जाता है। किसको? राम को। इसीलिए राम-राज्य मशहूर है। फिर नं. वार नारायण राज्य मशहूर नहीं है; क्योंकि निराकारी राम ही आकर आदि नारायण का राज्य स्थापन करते हैं।

वे राम और कृष्ण की आत्माएँ जो कभी देवता थीं, वे अभी साधारण मनुष्य हैं। इसलिए गीता में लिखा हुआ है कि मैं जब आता हूँ, तो मुझ साधारण मनुष्य तन में आए हुए भगवान को मूढ़मति लोग पहचान नहीं पाते। मैं ग़रीबनिवाज़ बनकर के आता हूँ; ग़रीब (ही) मेरे को पहचानते हैं। बहुधा साहूकार लोग मेरे को नहीं पहचान पाते। तो भगवान ग़रीबनिवाज़ बनकर आया हुआ है। इस संसार में जो अपने को दुखी महसूस कर रहे हैं, वे उसे जल्दी पहचान लेते हैं। जो महसूस करते हैं हम तो इसी दुनियाँ में स्वर्ग में हैं। हमको तो इस दुनियाँ में कोई दुख नहीं। तन का, मन का, धन का, समय का, सम्पर्कियों का, संबंधियों का हमको कोई प्रकार का इतना दुख नहीं, वे भगवान को जल्दी नहीं पहचान पाते। उन्हें भगवान की बनाई जाने वाली दुनियाँ की वैल्यू नहीं है। इसलिए जो नई दुनियाँ बनती है, उस दुनियाँ में आबादी बहुत कम होती है। कहाँ आज की दुनियाँ के 500/700 करोड़ मनुष्य और कहाँ आने वाली नई दुनियाँ के सिर्फ़ 9 लाख मनुष्य होंगे। इसलिए शास्त्रों में 9 लाख सितारों का सच्चा-2 गायन है। रानी के 9 लखा हार का गायन है। वो होते हैं आसमान के जड़ सितारे, जड़ चमक मारने वाले और ये हैं आत्मा रूपी धरती के सितारे, चैतन्य सितारे, जो विनाश के टाइम पर सारी दुनियाँ में फैल जाते हैं और ज्ञान की चमक मारते हैं। बताते हैं कि भगवान का जो सिखाया हुआ धंधा है- ईश्वरीय ज्ञान लेना और ईश्वरीय ज्ञान देना, इस धंधे में कोई नुक़सान नहीं है। दुनियाँ के और सब धंधे चौपट होने वाले हैं। इसलिए गायन है- 'सब धंधों में है नुक़सान, सिवाय एक ईश्वरीय धंधे के।' ईश्वर जो धंधा सिखाएगा, वो तो ज़रूर अविनाशी धंधा सिखाएगा। ईश्वर जो पढ़ाई पढ़ाएगा, वो तो ज़रूर अविनाशी पढ़ाई पढ़ाएगा। वो पढ़ाई है- भारत के प्रसिद्ध प्राचीन राजयोग की।

ये राजयोग राजा बनाने वाला है। इस योगबल से सारे विश्व की राजाई प्राप्त की जा सकती है। हिटलर, मुसोलिनी, नेपोलियन, इन्होंने हिसा के आधार पर सारी दुनियाँ में राजाई स्थापन करनी चाही; लेकिन ये लॉ नहीं है कि कोई हिसक बनकर सारी दुनियाँ का दिल जीत सके। ये सिर्फ़ यही राजयोग है। ये सहज ज्ञान और सहज राजयोग है, जिसके आधार पर सारी दुनियाँ के दिल को जीता जा सकता है। तब कहा जाता है- 'विश्वनाथ शंकर कहलाते' राधा-कृष्ण उन्हीं से आते। वे विश्व के बादशाह बनते हैं। उनका दूसरा नाम है- नर से सत्य नारायण, जिनकी कथा आज भी भारतवर्ष के घर-2 में गाई जाती है। सारी दुनियाँ जब कलियुग के अंत में झूठी बन जाती है, तो सुप्रीम सोल शिव उस नर अर्जुन (शंकर) में प्रवेश करके ऐसा पुरुषार्थ कराता है, ऐसी तपस्या कराता है, जिससे वह नारायण बन जाता है। नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी कैसे बनते हैं वह ज्ञान, गीता में दिया हुआ है। हे! अर्जुन, तू ऐसी करनी कर जिससे तू नर से नारायण बन और हे! द्रौपदी, तू ऐसी करनी कर जिससे तू नारी से लक्ष्मी बन।

अभी ऐसा ज्ञान देने के लिए भगवान आया हुआ है। बताता है- कि जन्म से ही हर मनुष्य को एक बड़ी-ते-बड़ी दात मिलती है। वो कौन-सी दात है? जन्म लेते ही ईश्वरीय दात मिलती है। पता है? वो कौन-सी दात है? ईश्वर का दिया हुआ दान। नहीं मालूम? बुद्धि। पूर्व जन्म के हिसाब से कहो या ईश्वरीय दात कहो, हर मनुष्य आत्मा को जन्मते ही बुद्धि प्राप्त होती है। उस बुद्धि का-जो ईश्वरीय दात है-उसका उपयोग करना चाहिए। हर मनुष्य को <u>अपनी</u> बुद्धि का उपयोग करना चाहिए। भगवान की दी हुई देन है। भगवान की दी हुई चीज़ का उपयोग नहीं करेंगे तो किसका उपयोग करेंगे? तन तो लौकिक मात-पिता देते हैं; लेकिन बुद्धि कौन देता है? वो ईश्वरीय दात है।

इस पापी कलियुगी संसार में अनेक प्रकार की झूठी बातें सुनने को मिलती हैं। अनेक प्रकार के गुरु हैं, जो अपनी-2 मनगढ़त कहानी सुनाते रहते हैं, कथाएँ सुनाते रहते हैं, ज्ञान सुनाते रहते हैं। इन मनुष्य गुरुओं की ढाई हज़ार साल की हिस्ट्री है। शास्त्रों की कथा-कहानियाँ सुनाते-2, मानवीय ज्ञान देते-2 सारी दुनियाँ चौपट हो गई। मनुष्य की सारी मैंटेलिटी ही नीचे गिर गई। अब भगवान कहते हैं- अब सिर्फ़ मेरे से सुनो। गुरुओं से तुम सुनते आए हो, उससे तुम पतित बन गए। अब मैं सब पतितों को पावन बनाने के लिए प्रैक्टिकल अर्जुन के शरीर रूपी रथ में आया हुआ हूँ। पहले तो बुद्धि सबकी पतित ही होती है। मन-बुद्धि को ही आत्मा कहा जाता है। आकर मन-बुद्धि को कैसे पतित से पावन बनाता है, उसका तरीका बताता है। बहुत सहज तरीका है- अपन को देह न समझो। अपन को आत्मा समझो। मैं आत्मा स्टार हूँ। भृकुटी के मध्य में ये स्टार चमकता है, जिसकी यादगार में मस्तक में बिदी लगाई जाती है। साधु-संत-महात्माएँ तिलक लगाते हैं, टीका लगाते हैं। मतलब टीका लगाने की बात दिखाने के लिए नहीं है, (ना ही) बिदी लगाने की बात सुंदर दिखने के लिए है। ये बात है आत्मिक स्थिति में ठहरने की। अपन को ज्योतिबिदु आत्मा समझो और दूसरों को भी ऐसा देखो, तो आत्मिक रूप में देखो। ये भी आत्मा, मैं भी आत्मा, तो दुनियाँ के जो सारे मतभेद हैं ऊँच-नीच के वो सब खतम हो जावेंगे। चाहे हिदू हो, मुसलमान हो, ब्राह्मण हो, भंगी हो, राजा हो, रंक हो, बीमार हो, पहलवान हो, क्या देखो? मैं आत्मा स्टार और ये आत्मा भी स्टार। पता नहीं ये पिछले जन्म में कौन थी? बड़े-से-बड़ा राजा भी हो सकती है। पता नहीं मैं पूर्व जन्म में कौन था? अभी तो अहंकार आ जाता है, मैं डाक्टर हूँ! मैं इंजीनियर हूँ; लेकिन पूर्वजन्म में क्या था? कुछ पता नहीं। तो पहली मुख्य बात बताते हैं- अपने को आत्म स्टार समझो। भृकुटी के मध्य में चमकता हुआ स्टार हूँ। अपन को आत्मा समझ के परमात्मा बाप को याद करो। क्या करो? तुम आत्मा भी बिदु और बिदु-2 आत्माओं का बाप

परमपिता-परमात्मा भी बिंदु। चींटी का बाप कैसा होगा? मोटा-ताजा होगा? लम्बा-चौड़ा होगा? चींटी का बाप चींटी होगा। हाथी का बाप हाथी जैसा होगा। तो बिंदी-2 आत्माओं का बाप कैसा होगा? बिंदी-2 आत्माओं का बाप भी बिंदी होगा। उस सुप्रीम बिंदु का बड़ा आकार है शिवलिंग, जो मंदिरों में पूजा करने के लिए दिखाया जाता है। शिवलिंग क्यों दिखाया जाता है? शिव का अर्थ क्या है? शिव मतलब कल्याणकारी। वह इस सृष्टि पर जब आता है, तो गर्भ से तो जन्म ले नहीं सकता; क्योंकि उसका कोई कर्मबंधन ही नहीं है। वह तो ज्ञान का सागर है। जो असल ज्ञान का सागर होगा, वो कर्मबंधन क्यों बाँधेगा? बाँधेगा क्या? नहीं बाँधेगा। तो वह सुख-दुख के कर्मबंधन में नहीं आता, इसलिए सदैव बिंदु है। तो फिर आकर ज्ञान कैसे सुनावे? मुसलमान तो कह देते हैं- अल्ला मियाँ ने ये फरमाया, अल्ला मियाँ ने वो फ़रमाया। अब अल्ला मियाँ ने फ़रमाया कैसे? क्या ऊपर से आवाज़ आती है? हिंदू लोग कहते हैं- आकाशवाणी हुई। किसी ने आज तक आकाशवाणी सुनी? नहीं। ये जो मुख है, इसमें हवा भरी हुई होती है। जब बोलते हैं, तो आवाज बाहर निकलती है। ये मुख में कान आकाश है। इस भृकुटी में प्रवेश करके परमात्मा वाणी उच्चारण करता है। जैसे गीता में लिखा है- "प्रवेष्टुम्।" (गीता 11/54) अर्थात् मैं प्रवेश करने योग्य हूँ।

तो वो बताता है- मैं गर्भ से जन्म नहीं लेता; लेकिन जैसे भूत-प्रेत प्रवेश करते हैं, ऐसे मैं प्रवेश तो कर सकता हूँ। अब सवाल है, किसमें प्रवेश करूँ? XYZ किसी में भी सदाकाल प्रवेश कर जाऊँ क्या? अरे, इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट ऊपर से आते हैं; जो आत्मा ऊपर से, परमधाम से आएगी, भगवान के धाम से आएगी, तो आकर क्या गर्भजेल से जन्म लेगी? गू-मूत की दुनियाँ में 9 महीने पलेगी? नहीं। वो तो पावन धाम से आई है, इसलिए पहला जन्म कोइ-न-कोई में प्रवेश करती है। जैसे जीज़स के शरीर में क्राइस्ट ने प्रवेश किया। ऐसे सभी धर्मपिताओं का पहला जन्म होता है। ऊपर से आत्मा आती है और कोई-न-कोई पतित तन में प्रवेश करती है और उसके द्वारा अपने धर्म की स्थापना करती है। ऐसे ही परमपिता-परमात्मा भी जब इस सृष्टि पर आते हैं, तो कोई-न-कोई में मुकर्रर भी प्रवेश करते हैं। किसमें प्रवेश करते होंगे? कोई साधु-संत, महात्मा में प्रवेश करते होंगे? उन्होंने बहुत तपस्या की है! क्यों? साधु-संत-महात्मा में भगवान को प्रवेश नहीं करना चाहिए? नहीं; क्योंकि भगवान आता ही है पतितों को पावन बनाने के लिए। साधु-संत-महात्माएँ पवित्र रहते हैं या अपवित्र होते हैं? वे तो पवित्र जीवन बिताते हैं। उनमें प्रवेश करके क्या करेगा? भगवान तो आता ही है पतित दुनियाँ में। सत्युग में नहीं आता, त्रेता में नहीं आता, द्वापर में भी दुनियाँ इतनी पतित नहीं होती। कलियुग अंत में आकर दुनियाँ बहुत पतित हो जाती है। मूत-पलिती हो जाती है। मनुष्य की बुद्धि में सिवाय मूत पीने के कोई दूसरी बात ठहरती नहीं, ऐसी दुनियाँ में आता है। जब मनुष्य ऐसा बनता है तो पशु-पक्षी, जानवर भी ऐसे ही बन जाते हैं; क्योंकि मनुष्य मनन-चिंतनशील प्राणी है, मन-बुद्धि वाला है, तो वो वायुमण्डल को कंट्रोल करता है। जानवर तो ऑटोमेटिक मनुष्य के वातावरण का अनुसरण करते हैं। प्रूफ है- जो जानवर जंगल में रहते हैं, वो ज़्यादा बीमार पड़ते हैं या घरों में, गाँव में जो जानवर रहते हैं, वो ज़्यादा बीमार पड़ते हैं? (सभी ने कहा- जो घरों में रहते हैं।) क्यों? क्योंकि मनुष्य विकारी है, तो बहुत बीमार पड़ता है। उसके नजदीक वायुमण्डल में रहने वाले जानवर भी बहुत बीमार पड़ते हैं।

भगवान पतित दुनियाँ में आता है, पतित तन में आता है। अब कैसे पता चले कि कौन पतित है, पतित-से-पतित तमोप्रधान कौन है और पावन कौन है? ये दुनियाँ एक ड्रामा है। इस ड्रामा में ऊँच-ते-ऊँच पार्ट किसका है

और नीच-ते-नीच पार्ट किसका हो सकता है?। जो जितना ऊँचा चढ़ेगा वो उतना नीचे गिरेगा या नहीं गिरेगा? ऊँचा चढ़ेगा सो नीचे भी गिरेगा ये नियम है। तो इस सृष्टि के जो हीरो-हीरोइन पार्टधारी हैं, कोई तो होंगे, उन हीरो-हीरोइन पार्टधारी में परमपिता प्रवेश करता है। सत्युग के आदि में वे नर नारायणी बनते हैं, सारे विश्व के मालिक बनते हैं और कलियुग के अंत में हीरो बेगर बन जाता हैं। उस बेगर को फुल प्रिन्स बनाने के लिए भगवान आता है। किसके तन में आता है? उस बेगर का नाम बहुत प्रसिद्ध है। बेगरी रूप में घूमता है। कौन है? 'शंकर'। शंकर देवता को बेगरी रूप में दिखाया जाता है। ब्रह्माकुमारियाँ कहती हैं- ब्रह्मा में आता है। अगर ब्रह्मा में आया होता तो ब्रह्मा के मंदिर होते, मूर्तियाँ बनाई जातीं, मंदिरों में पूजा होती। ब्रह्मा की मूर्तियाँ बनती हैं क्या? पूजा होती है क्या? मंदिर बनते हैं क्या? नहीं बनते हैं। इसका मतलब ब्रह्मा के रूप में भगवान नहीं आता। ब्रह्मा तो दाढ़ी-मूँछ वाला है। दाढ़ी-मूँछ वाले विकारी होते हैं। मनुष्यों को दाढ़ी-मूँछ होती है। राक्षसों को दाढ़ी-मूँछ होती है। देवताएँ क्लीन शेव वाले होते हैं। इसलिए भगवान तो ऐसे में आता है, जो पहले पतित होता है और बाद में राजयोग की पढ़ाई पढ़कर निर्विकारी बन जाता है। पतित-से-पतित में आता है और पावन-ते-पावन बनाकर के जाता है। भगवान जिसमें मुकर्रर प्रवेश करेगा, जिसमें संग का रंग लगाएगा, वह ज़्यादा ऊँचा चढ़ेगा कि कोई दूसरा ऊँचा चढ़ेगा? जिसमें भगवान सदैव मुक़र्रर रूप से प्रवेश होकर वाणी चलाएगा, चरित्र करेगा, वह ऊँचा जाएगा (ओम शान्ति)।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025